सूखी डाली

एकांकी परिचय –

अश्क जी उपन्यासकार, कहानी-लेखक, कवि, नाटककार, निबंध, प्रणेता और रेखाचित्रकार के अतिरिक्त नाटककार व एकांकी-लेखक भी है तथा उनके कई एकांकी-संग्रह प्रकाशित हो चुके है। 'सूखी डाली' उनके सुप्रसिद्ध एकांकी संग्रह 'चरवाहे' का अन्तिम एकांकी नाटक है और संक्रान्ति काल में जहाँ पग-पग नये पुराने की टक्कर है, बल्कि जो नये हार-हार के संघर्ष की झांकी 'सूखी डाली' में दी है।

रीढ़ की हड्डी

एकांकी का परिचय :–

श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने बहुत ही कम परिमाण में एकांकी लिखे है परन्तु उन्हें हिन्दी के श्रेष्ठतम एकांकीकारों में माना जाता है और कहा जाता है कि आपने नाटकों में जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है आपके पात्र अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व और चारित्रिक विशेषताएँ लिये होते हैं। आपने मध्य वर्गीय जीवन को अपनी आलोचना का केन्द्र बनाया है। रंगमंच के विधान-विश्लेषण, अभिनय, संकेत आदि के सम्बन्ध में आपको विशेष सफलता मिली है।

रीढ़ की हड्डी उनका उल्लेखनीय एकांकी है और यह एक सबल व्यंग्य है। कन्याओं की सामाजिक स्थिति का इससे अनुमान लगाया जा सकता है। इसमें समाज की उस घृणित मनोवृत्ति का चित्रण किया गया है, जो कुमारी युवती को गाय-कुर्सी के समान बेजान और निरीह समझती है।

Short Question — 1 Mark.

(1) मनुष्यों में भले आदमी के बारे में क्या कहा गया है?

(2) अध्यापक पूर्ण सिंह के अनुसार हृदय शीतल होने का उपाय ...

(3) "हे री लोग कहीं, शरदी! ... लोगी गमन, सो लो अँसुवाला को लोगी गई लोग", किस कवि की यह उक्ति है?

(4) 'बाण' 'पुरातनविग्रहसम्मत' किस काल की रचना की गई थी

(5) 'रामधारी सिंह दिनकर' की द्वारा लिखित ललित निबंध का नाम क्या है?

(6) आधुनिक साहित्य के ... आलोचक, चरित्र है

(7) किस पेड़ को बारह महीने में बसंत ही बसंत रहता है? अमरूद

(8) सावधानी की आवश्यकता के निबंधकार कौन है कृष्णा प्रसाद

(9) हमारे देश में प्रचलित दो विविध प्रथाएँ क्या-क्या है?

(10) 'हिन्दी की सेवा' का अर्थ क्या है।

(11) साहित्य ... के लिए कैसा हृदय जरूरी है?

(12) गुरुदेव कौन है।

(13) बालमुकुन्द गुप्त की निबंध-शैली की एक विशेषता लिखिए।

(14) राहुल सांकृत्यायन की किसी एक कृति का नामोल्लेख कीजिए

(15) रामविलास शर्मा का कौन सा निबंध 'निबंध-निकाय' में है

— 2 Mark —

(1) कवियों के उर्मिला के प्रति कैसे उदासीनता दिखाई है?

(2) कछुआ धर्म निबंध के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।

(3) क्यों मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है? निबंधकार के विचारों को संकलित पाठ के आधार पर प्रस्तुत कीजिए।

(4) निबंधकार के रूप में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी पर एक लेख तैयार कीजिए।

Short Question

(1) [illegible]
(1) 'सामान्यो' और 'प्रेम' के निबन्धकार कौन हैं?
(2) नरेन्द्र शर्मा द्वारा लिखित निबन्ध का नाम बताइए।
(3) तुलसीदास के द्वारा ... बार ... का मूल कारण क्या है?
(4) कवियों की ... सौरभ का अर्थ क्या है?
(5) भारतवर्ष की ... क्या है?
(6) शुक्ल ... की एक निबन्ध शैली का उद्देश्य दीजिए।
(7) उर्मिला को ... प्रेम और पति-पत्नी की ...
(8) 'शतरु' का अर्थ क्या है?
(9) ... की एक निबन्ध शैली का उद्देश्य दीजिए।
(10) 'कल्पना दो प्रकार की होती है — विधायक और ... ।'
(11) गुरुदेव कौन थे? रवीन्द्रनाथ ठाकुर
(12) साधारण जनता की भाषा क्या है?
(13) 'साहित्य ही साहित्य का लक्ष्य है' के निबन्धकार कौन हैं।

4 mark

(1) 'भ्रातृभूमि-दर्शन' का मतलब क्या है।
(2) भारतवर्ष की एकता और उनकी विविधताओं में छिपी हुई है?
(3) हास्य-व्यंग्यात्मक निबन्धकार के रूप में हरिशंकर परसाई का मूल्यांकन कीजिए।
(4) महावीर प्रसाद द्विवेदी की निबन्धात्मक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(5) निबन्धकार विशेषताओं के रूप में बालमुकुन्द गुप्त पर टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

8 mark

(1) कविता के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है? कविता क्या है पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।
(2) 'बसन्त आ गया है' अथवा 'सावधानी की आवश्यकता' पाठ के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।

नई दिशा - बोध प्राप्त हुआ। उस अंक में प्रथम बार श्रेष्ठ लेखकों के उत्तम एकांकी नाटक एक साथ प्रकाशित हुए थे और एकांकी नाटक से सम्बन्धित उच्चस्तरीय आलोचनाएँ सामने आई थीं।

(द) हिन्दी एकांकी नाटक का विकास :-

एकांकी नाट्य - साहित्य का काल विभाजन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है।

1. प्रथम विकास युग अथवा भारतेन्दु युग (सन 1870 से सन 1905)
2. द्वितीय विकास युग अथवा द्विवेदी युग (1908 - 1924)
3. तृतीय विकास युग (1925 - 1938)
4. चतुर्थ विकास युग (सन 1939 से अब तक)

परिभाषा, महत्व, तत्व, स्वरूप

1. हिन्दी का प्रथम सफल एकांकी ऐतिहासिक आधार पर है।
2. डा० रामकुमार वर्मा के सन 1930 में पहला एकांकी बादल लिखा।
3. उसके बाद पृथ्वीराज की आँखें
4. 'बुड्ढा का ब्याह' व्यंग्यात्मक एकांकी है। (पं० हरिशंकर शर्मा)

(5) संकलन-त्रय का समुचित निर्वाह (6) प्रभविष्णुता एवं तेजस्विता (7) शीघ्रता एवं अन्त द्वन्द्व (8) अभिनेयता (9) सुनिश्चित एवं सुकल्पित लक्ष्य (10) आकस्मिक अन्त तथा (11) अभिनेता का नाटकीयता का साक्षात्कार।

हिन्दी के एकांकी नाटक का उद्भव :-

संस्कृत नाट्यशास्त्र के आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में पन्द्रह प्रकार के एक अंक वाले नाटकों का उल्लेख किया है। इनमें दस रूपक है तथा पाँच उपरूपक है। विद्वानों के एक वर्ग का कहना है कि एकांकी नाटकों की परम्परा यहीं से आरम्भ होती है। विद्वानों के दूसरे वर्ग का कहना है कि हिन्दी एकांकी नाटक पाश्चात्य एकांकी नाटकों के अनुगामी है। यह तो निश्चित है कि हिन्दी के आधुनिक एकांकी नाटक प्रकृति, रचना प्रकार तथा शिल्प की दृष्टि से संस्कृत के एकांकियों से बहुत दूर है। वास्तविकता यह है कि हिन्दी एकांकी ने अपने प्रारम्भिक रूप में संस्कृत एकांकी से प्रेरणा ग्रहण की, परन्तु आगे चलकर उसने अपने वर्तमान स्वरूप का निर्माण पाश्चात्य एकांकी के आधार पर किया है।

हिन्दी का प्रथम एकांकी नाटक -

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि हिन्दी का एकांकी नाटक पाश्चात्य के एकांकी नाटकों के अनुकरण पर विकसित हुआ है, और यह अंग्रेजी साहित्य की देन है तथा हिन्दी के आधुनिक एकांकी नाटक की परम्परा सन् 1930 से डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित एकांकी 'बादल की मृत्यु' से आरम्भ होती है। इसके उपरांत आधुनिक एकांकी-लेखन को सन् 1938 में प्रकाशित हंस के एकांकी अंक से वास्तविक मार्गदर्शन

(5) संकलनता - नाटक के एकांकी में संकलनत्रय का इतना ... नहीं है; किन्तु अपेक्षित है। इसमें एकांकी नियमों का पालन किया जाता है।

(6) एक पात्र की प्रमुखता :- इसमें नायक, प्रतिनायक, नायिका, प्रति नायिका आदि की आवश्यकता नहीं होती है। एक पात्र प्रमुख पात्र रहता है, शेष गौण रहते हैं।

(7) मानव जीवन के सत्य का उद्घाटन - एकांकी नाटक का उद्देश्य मानव-जीवन के किसी महत्वपूर्ण पक्ष का चित्रण अथवा किसी सत्य का उद्घाटन करना रहता है।

(8) रचना एक अंक के लिए :- एकांकी की रचना केवल एक अंक के लिए की जाती है। इस एक अंक में एक या दो से अधिक दृश्य हो सकता है। दृश्यों में ... होना आवश्यक है। एकांकी की अवधि किसी भी ... से अधिक नहीं होना चाहिए।

(9) प्रारम्भ एवं अन्त आकस्मिक :- एकांकी का प्रारम्भ बिना किसी भूमिका के तत्काल हो जाता है। इसी प्रकार एकांकी का अन्त भी आकस्मिक होता है। ... चरम सीमा पर होता है। एक ... के ... में, एकांकी की अनुभूति चरम सीमा पर पहुँचती है और वहीं ... का रूप ग्रहण कर लेता है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि एकांकी नाटक दृश्य काव्य की एक विधा है जिसमें ... पायी जाती है ... (1) ... (2) ... एक घटना अथवा परिस्थिति का चित्रण (3) ... कौतूहलपूर्ण ..., ... (4) ... सीमा पर ...

(२) मंटो के मौलिक कहानी का उद्देश्य क्या है,

(३) कथाकार के रूप में भीष्म साहनी का आधार परिचय दीजिए।

(४) मनोवैज्ञानिक कथाकार के रूप में जैनेन्द्र कुमार की कहानी शैली पर टिप्पणी लिखिए।

— x x x —

एकांकी की विशेषताएँ — उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सभी विद्वान, एकांकी के स्वरूप निर्धारण में एकमत नहीं है। परन्तु एकांकी के कुछ ऐसे सामान्य लक्षण हैं जिनको प्रायः समस्त विद्वानों ने स्वीकार किया है —

① संक्षिप्तता :- एकांकी में मानव-जीवन की एक घटना, एक विचार, एक अनुभूति, एक परिस्थिति, एक समस्या विशेष का ही चित्रण होता है। फलतः एकांकी में विस्तार एवं फैलाव न होकर गहनता एवं सीमितता का भाव होता है।

② सुकल्पित लक्ष्य :- लक्ष्य की ओर एकांकी की गति निर्झर के वेग की भाँति क्षिप्र होती है। गति में एकता तथा एकाग्रता भी रहती है।

③ सुगठित कथानक :- एकांकी का कथानक, वस्तुतः घटनाओं का ऐसा गुम्फन होता है कि उसमें किसी प्रकार का बिखराव नहीं हो सकता है।

④ कुतूहल और जिज्ञासा :- एक संघर्ष एवं अन्तर्द्वन्द्व एकांकी के प्राण हैं। कुछ प्राणतत्व घटनाक्रम एवं चरित्र-चित्रण दोनों में रहता है। इसके कारण एकांकी में कुतूहल एवं जिज्ञासा की धारा अविच्छिन्न रूप से व्याप्त रहती है।

की सेवा करूँगा। आज से मेरा संहार करना होगा। कि मैं सब जीवों की रक्षा का अधिक से अधिक प्रयत्न करूँ।" इस प्रकार अशोक में एक नाटक के गुणों हुआ है।

एकांकी की परिभाषा :-

वर्माजी के अनुसार - एकांकी में एक भावना और एक एक घटना का प्राधान्य होता है। वही एक घटना कली के समान खिलकर पुष्प के रूप में विकसित हो मानव हृदय को आह्लादित करती है।

विष्णु प्रभाकर — एकांकी को नाटक का छोटा रूप नहीं मानते अपितु उनके अनुसार " बड़ा नाटक उपन्यास के समान है और एकांकी गल्प के समान।

सेठ गोविन्द दास — एकांकी में कोई मूल विचार या समस्या का होना आवश्यक मानते हैं।

डा० नगेन्द्र का मत है - एकांकी में हमें जीवन का क्रमबद्ध विवेचन न मिलकर एक पहलू, एक महत्वपूर्ण घटना, एक विशेष परिस्थिति अथवा एक उद्दीप्त क्षण का चित्रण मिलेगा।

महारानी अशोक से चारुमित्रा की क्षमा का दान का आग्रह करते हुए कहती है —

"चारुमित्रा कलिंग देश की है, परन्तु युद्ध से पहले से ही वह यहाँ सेविका का कार्य कर रही है, उस पर तुम्हें सन्देह नहीं करना चाहिए।

x x x

④ कोमल हृदय :—

कलिंग के युद्ध की भयंकरता, घायलों का क्रन्दन, सैनिकों की क्रूरता अशोक के हृदय में करुणा की भावना जाग्रत कर देती है और वह अपनी पत्नी तिष्यरक्षिता से कहता है —

"आज पाटलिपुत्र की विजय हुई, किन्तु देवी उस स्त्री की आत्महत्या ने मेरा ध्यान संग्राम में मर हुए वीरों की माताओं की ओर आकर्षित कर दिया है और मेरी विजय में केवल पीसे उत्कर्ष के बदले अभिशाप तड़प रहा है।"

इस प्रकार अशोक का हृदय परिवर्तन होता है और वह युद्ध बन्द कर देता है।

⑤ करुणा की भावना :—

"महाभिक्षु, आज से मैं हिंसा किसी रूप में भी न करूँगा और देखूँगा कि किसी मनुष्य का रक्त इस पृथ्वी पर न पड़े। प्रत्येक स्थान पर सिंहासन पर/अन्तःपुर में विहार में, मैं जनता

(1) वीर, सेनापति एवं युद्ध प्रेमी :-

सम्राट अशोक एक योग्य सेनापति व स्वयं युद्ध प्रेमी भी है। वे आर्यावर्त युद्ध भूमि की ही ओर रहते हैं। निम्नलिखित उदाहरण से सम्राट युद्ध भूमि से लौटकर अपने शिविर में आकर रानी से निम्नलिखित बातें करते हैं, जिससे उनकी युद्ध प्रियता का प्रमाण है। —

"विजय, देवी, आज युद्ध में फिर विजय! आह तुम्हारी मंगल कामनाओं में कितनी शक्ति है। विजय, विजय विजय!"

(2) महत्वकांक्षी :-

अशोक महत्व एक महत्वकांक्षी सम्राट है जो समस्त आर्यावर्त पर अपना अधिकार देखना चाहता है। वह युद्ध-भूमि में विश्राम नहीं लेना चाहता।

"देवी, मुझे विश्राम! पितामह चन्द्रगुप्त ने 24 वर्ष के शासन में कितना विश्राम किया? तक्षशिला से मगध तक तक पृथ्वी का प्रत्येक कण उनकी आहट सुनकर काँपता था। ... मैं उन्ही की सन्तान हूँ देवी। विश्राम के लम्बे क्षणों से राज्य सीमा संकुचित हो जाती है।"

(3) राजनीति में व्यवहार-कुशल :-

सम्राट अशोक वीर, सेनापति और महत्वकांक्षी होते हुए भी राजनीति को खूब समझता है। वह इसमें व्यवहार-कुशल है, किस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, वह भली-भांति जानता है।

Q चारुमित्रा चरित्र चित्रण :-

चारुमित्रा तिष्यरक्षिता की परिचारिका है। वह महाराज अशोक की सेवा उनके राज्याभिषेक से पहले से ही कर रही है। वह कलिंग देश की रहने वाली है।

① देश-प्रेमी — चारुमित्रा कलिंग-कुमारी है। वह अपने देश से प्रेम करती है कलिंग और मगध के युद्ध के समय वह मगध-सम्राज्ञी तिष्यरक्षिता से कहती है —

चारुमित्रा — "युद्ध अभी बहुत वर्षों तक चलेगा, महारानी।"

तिष्यरक्षिता — (आवेश से) "क्या, क्या चारु, तू महाराज की शक्ति का अपमान करती है?"

× × × × ×

② स्वामिभक्त :- चारुमित्रा जितना अपने देश से प्रेम करती है, उतना ही वह अपने स्वामी से करती है। वह तिष्यरक्षिता से कहती है — "संसार में उनका अपमान करने की शक्ति किसी में नहीं, महारानी और मैं तो उनकी आजन्म सेविका हूँ।" अन्त में वह अपने ही देश के सैनिकों को मारती है और सम्राट अशोक के प्राणों की रक्षा करती है, इस प्रकार वह अपनी सच्ची स्वामिभक्ति का परिचय देती है।